अस्पृश्यता की समाप्ति में गांधी जी की भूमिका।

डा0 राकेश कुमार राम

इतिहास विभाग

जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

शताब्दियो से अस्पृश्यता भारतीय समाज–व्यवस्था का अभिन्न अंग रही है। यहॉ तक कि धार्मिक व्यवस्था भी मान लिया गया। अपने ही सहधर्मियों को समूल नष्ट करने और उनकी अवग्या करने वालो को दंडित करने का यह संकल्प अपने आप में एक क्रांति थी। देश के बुनियादी कानून के माध्यम से अनुसूचित जातियो एवं जनजातियों और उत्पीड़ितो को सामातिक समता तथा समान राजनितिक अधिकारों को मान्यता देनेवाली क्रांति।

29 अपैल 1947 निश्चय ही वह भारतीय इतिहास का एक गौरवमय दिन था, उस दिन संविधान सभा ने प्रस्ताव पारित करके घोषणा की कि अस्पृश्यता है। प्रस्ताव सरदार पटेल ने पेश किया था,बाद में यही घोषणा भारतीय संविधान में अनुच्छेद 17 के रुप में सम्मिलित की गयी। संविधान निर्माताओं के इस निर्णय की तुलना अमेरिका के उन्मूलन (1965) और रुस में कृषि दासो की मुक्ति (1868) से ही की जा सकती थी। अनेक विदेशी समाचारपत्रों ने अस्पृश्यता–उन्मूलन की इस घटना का स्वागत किया। विडंबना यह रही कि किसी भी विदेशी समाचारपत्र ने अस्पृश्यो के अधिकारो के लिए वर्षो से कार्यरत डा0 भीमराव अंबेडकर का उल्लेख तक नही किया।

निस्संदेह गांधी और अंबेडकर दोनों ने अस्पृश्यता मिटाने और अस्पृश्यों की जीवन–परिस्थितियों में सुधार के लिए सतत् प्रयत्न किये। किन्तु 1932 में गांधी के उपवास के बाद की छोटी सी अवधि को छोड़कर दोनों के विचारों में ही नहीं संबंधों में भी गहरी कटुता रही। गांधी जी की विलक्षणता को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन उनकी आत्मकथा सत्य के प्रयास है। पश्चिमी तथा पश्चिमी मानसिकतावाले पाठकों को यह पुस्तक रातनितिक नेता की जीवन–गाथा से कहीं अधिक किसी संत की आत्मस्वीकृतियों का संकलन लगती हैं। आत्मकथा में गांधी अपने निजी जीवन की गतिविधियों को लेकर इतने उद्विग्न प्रतीत होते थे कि इसे कन्फेशंस कहना अधिक संगत होता। मनोविज्ञानी एरिक एफ एरिकसन के अनुसार गांधी की आत्मकथा केवल अतीत की स्मृतियों का संकल नही नहीं हैं वह युवकों को सचेत करने के साथ ही उनका मार्गदर्शन करने के उद्वेश्य से लिखी गयी कथा भी हैं।

गांधी जी के संवेदनशील मन में अन्याय–पीड़ित अछूतों के प्रति गहरी सहानुभूति रही। उन्होने लिखा हैं कि जब वे बारह वर्ष के थे तब से ही वे छुआछूत को नापसंद करते थे। गांधी जी ने अस्पृश्यता की खुली निन्दा दक्षिण अफ्रिका में शुरु की थी। गोरों के नस्लवाद के विरुद्व संघर्ष के दौरान गांधी से यह सवाल अकसर किया जाता था कि सदियों से अछुतों के साथ गुलामों से भी बदतर बर्ताव करनेवाले भारतियों को गोरों के साथ बराबरी की मांग करने का क्या अधिकार हैं। जबाब में गांधी जी कहते थे–अस्पृस्यता मूल हिन्दू धर्म में नहीं थी। वह तो हिन्दुओ के पतन और पराभव के दौर में पनपा कलंक हैं। भारत में आने के बाद भी वे देश भर में घूम–घूमकर यही प्रचार करते रहे।

ऋगवेद से बौद्ध काल एवं बौद्ध धर्म के पतन से लेकर नवजागरण काल के भारतीय समाज के लगभग 3500 साल के सामाजिक इतिहास में वर्ण व्यवस्था, जाति विभेद, अस्पृश्यता पतनशील दासता और

जाति प्रथा ने ही अंतर्जातीय विवाह संस्था को प्रबंधित किया, इसी ने अस्पृष्यता को जन्म दिया। अस्पृष्यों के सामाजिक–आर्थिक अधिकार छीनकर उन्हें दलित–वंचित–सामाजिक व्यवस्था में निःसहाय बनाया। अस्पृश्यता का दंश झेल रहे वंचित समाज द्वारा भंगी का कार्य देख गांधीजी को तीव्र पीड़ा हुई तथा उन्होंने स्वयं इस कार्य को करने का प्रस्ताव वर्धा आश्रम के स्वयंसेवकों से किया। आर्थिक दृश्टिकोण से विपन्न दलित समाज के आर्थिक आधार पर मजबुत करने के लिए गांधीजी के मार्ग एवं हिन्दु समाज की कुरितियों को समाप्त करने तथा दलितों–वंचितों के मन में उत्पन्न द्वेश तथा धर्मान्तरण की भावना की समाप्ति के लिए गांधीजी की सुझावों एवं उनके प्रयास अतुल्यनीय है।

हर युग में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक क्रांतियाँ होती हैं। ये सुधार कम–व–बेश हर तबके के लोगों में सुधार लाने की चेश्टा करते हैं। ज्योतिबा फूले ने, भले ही सीमित प्रभाव के साथ, शिक्षा के जरिये दलितों में चेतना लाने की कोशिश की और वे पुरातनवाद को ध्वस्त करने के अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल हुए। फूले समग्र सामाजिक क्रांति के मसीहा थे, उन्होनें सोए हुए पूरे समाज को झकझोरा। निश्चित रूप से राजमोहन राय ने समाज को जड़ भावों से प्रगतिशील चिंतन की ओर ले जाने वाले महापुरूष थे।

स्वामी विवेकानन्द, रामकृश्ण मिषन के जन्मदातों अनुसूचित जातियो एवं जनजातियों के प्रति जोरदार सहानुभूति रखते थे। उन्होंने अनुसूचित जातियो एवं जनजातियों की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु जोरदार आवाज उठाई। शायद बहुत कम लोगों को इस बात का ज्ञान है कि अम्बेडकर से बहुत पहले सर सैय्यद अहमद खां ने ब्रिटिश वायसराय के सम्मुख अपने अपने लम्बे–चौड़े प्रतिवेदन में भारत के मूल निवासी (अनुसूचित जातियो एवं जनजातियों–वंचितों) के हकों के लिए जोरदार वकालत की थी और फूले के जीवनकाल में ही दलितों की मुक्ति का पथ–प्रशस्त किया था। केवल सत्यशोधक समाज ही ऐसा सामाजिक संगठन था जिसके मुख्य संस्थापक निम्न और अछूत जाति के थे जिन्हें वंचित होने के दर्द का एहसास था।

गांधी एवं अम्बेडकर के वंचितोत्थान संबंधित विचारों के काफी प्रसंगिक है। अम्बेडकर के कुछ मौलिक प्रश्न थे कि कांग्रेसजन हमारे आन्दोलन को देशद्रोही का आन्दोलन क्यों मानते हैं जिस मातृभूमि में हमारे साथ कुत्तें–बिल्लियों से बुरा बर्ताव होता है उसे मैं अपनी मातृभूमि कैसे कह सकता हूँ ? जो धर्म मुझे आत्मसम्मान नहीं दे सकता उसे मैं अपना धर्म कैसे कहूँ ? गांधीजी इन सवालों से बेचैन हो उठे।

दूसरे गोलमेज कान्फ्रेंस में अस्पृश्यता के मुद्दे पर गांधी और अम्बेडकर आमने–सामने हो गये। यह टकराव मुख्यतया तीन मुद्दों पर थाः

1- अस्पृश्यों का प्रवक्ता होने का अधिकार,
2- अस्पृश्य हिन्दू हैं या वे उनसे पृथक अल्पसंख्यक हैं,
3- अस्पृश्यों को समुचित प्रतिनिधित्व देने के प्रभावी उपाय।

गांधी ने अस्पृश्यता मिटाने के लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही नहीं की, यह शिकायत अम्बेडकर और उनके अनुयायियों ने हमेशा दुहराई है। वंचितोत्थान आन्दोलन में गांधी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। गांधी के संवेदनशील मन में अन्याय–पीड़ित अछूतों के प्रति गहरी सहानुभूति थी। गांधी ने 1905 में अपने पत्र “ Indian opinion” में लिखा–''मेरी नजरों में तो ब्राह्मणों और अछूतों में अंतर नहीं है।'' उसके दो साल पष्चात् उन्होंने घोशणा की कि अस्पृश्यता 'दृश्टतापूर्ण अंधविश्वास' है। अस्पृश्यता को वह हिन्दूधर्म का संग नहीं मानते थे वे कहते थे कि यदि कोई यह सिद्ध करें कि यह हिन्दू धर्म का आवश्यक अंग है तो कम–से–कम मैं तो हिन्दू धर्म के विरुद्ध विद्रोह कर दूँगा। 1920–25 में तो अस्पृश्यता उनके राजनीतिक अभियान का प्रमुख मुद्दा ही बन गया था। इसे वे समाज और देश दोनों के लिए समान रूप से घातक मानते थे।

गांधी अस्पृश्यता के प्रश्न पर एक साथ दो मोर्चों पर सक्रिय थे। वे सवर्णो में अस्पृश्यता बरतने के लिए एक प्रकार का अपराध बोध उत्पन्न करा रहे थे। इसलिए गांधी ने अस्पृश्यता को 'अपराध' नहीं 'पाप' कहा। गांधी के अस्पृश्यता–निवारण आन्दोलन का दूसरा मोर्चा अस्पृश्यों के बीच था। वे उनको अपने

परंपरागत सोच और जीवन–शैली में बदलाव की जरूरत समझा रहे थे। वे अछूतों में अशिक्षा, अंधविश्वास, शराबखोरी, कुत्सित रूढ़ियों तथा उनमें व्याप्त आपसी अस्पृश्यता को समाप्त करने पर जोर दे रहे थे।

आरम्भ से ही गांधी को स्पष्ट लग गया था कि हिन्दू धर्म की सबसे बुरी चीज अस्पृश्यता है। सवर्णो का अंत्यजों की प्रति जो दुर्व्यवहार था जो हिन्दू धर्म के एक बड़े तबके को तिरस्कृत कर दिया था। गांधीजी इसे हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी कमजोरी मानते थे। गांधीजी ने सवर्ण हिन्दूओं को प्रेरित किया कि वे दलितों को अपना भाई समझें।

एम0एस0 गिल ने अपनी कृति 'गांधी : ए सबलाइम फेल्योर' में लिखते हैं कि 'हिन्दू–मुस्लिम एकता' के बाद गांधी की प्रमुख समस्या अस्पृश्यता मिटाना था। गांधी के विचारों में भारत की आजादी बेमानी होगी क्योंकि अनुसूचित जाति/जनजाति भारत की आबादी का पांचवा हिस्सा है, हिन्दुत्व के लिए अस्पृश्यता घोर कलंक है। वे वंचितों एवं अछूतों के दुखों का भागी बनने हेतु, वे यदि संसार में जन्म भी ले तो अछूतों के घर, ऐसी उनकी कामना थी।

संदर्भ सूचिः–

1.कीर, धनंजय, डा0 अंबेडकर : लाइफ एंड मिशन, पृ0–313

2.गांधी,राजमोहन, दि गुड बोटमनः ए पोटेंट ऑफ गांधी, पृ.–231

3. यंग इंडिया,19 जनवरी 1921

4. राममनोहर लोहिया, हिन्दू बनाम हिन्दू, पृ0–10

5. गांधी, मो0 क0 उपयुक्त, पृ0–343

6. नैयर, सुशिला, इंडिया अवकंड पृ0–86

7.फिसर, लुई, दि लाइफ ऑफ महात्मा गांधी, पृ0–82

8.अयर,राघवन,दि मॉरल एंड पोलिटिकल थॉट ऑफ महात्मा गांधी, पृ0–373

9.देशाई महादेव, भाग–5 पृ0–108

10.पारेख, भिखु, कॉलोनियलित्म, ट्रेडिशन एंड रिफॉर्म, पृ0–2